श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल, राजस्थान का उद्‌बोधन

राष्ट्र निर्माण एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

भ्रान्तियां और प्रभावकारिता समारोह

दिनांक 09 फरवरी, 2020 समय प्रातः 11.00 बजे

स्थान – डीएवी पीजी कॉलेज, वाराणसी

माननीय पंडित नीलकंठ तिवारी जी, राज्यमंत्री, उत्तर प्रदेश, डॉ. एस.डी. सिंह जी, श्री अजीत सिंह जी, प्रो. आर. पी.पाठक जी, डॉ. शिव बहादुर सिंह जी, भाइयो, बहनो, पत्रकार बन्धुओ और छायाकार मित्रो।

राष्ट्र न तो किसी भूमि का बेजान टुकड़ा होता है कि जिस पर किसी वस्तु का निर्माण किया जा सके। राष्ट्र किसी भवन का नाम या नक्शा भी नहीं जिसकी मरम्मत या फिर जिसके अनुसार किसी तरह का कोई निर्माण कार्य किया जा सके।

राष्ट्र तो एक भावना हुआ करती है जो व्यक्ति या व्यक्तियों को किसी भूभाग के कण–कण से प्रत्येक जड़–चेतन, प्राणी और पदार्थ से जोड़े रखती है। यह भावना तभी सजीव–सप्राण रह पाती है जब उस भावना के अनुरूप एक विशिष्ट भूभाग से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति में एकता का भाव हो।

इस तरह जन समुदाय की एकता ही वह मूल आधार है जिस पर भावना के स्तर पर राष्ट्रीयता और व्यवहार के स्तर पर राष्ट्र के दृश्य स्वरुप भूभाग अर्थात देश का नव निर्माण किया जा सकता है।

राष्ट्र निर्माण के लिए भावनात्मक स्तर पर एकता व संगठन के माध्यम से युगीन परिस्थितियों के अनुरूप राष्ट्र का संरचनात्मक विकास किया जा सकता है। संरचनात्मक विकास और संगठन के लिए विचारधाराएं आधार के रूप में कार्य करती हैं। विचारधारा के अभाव में राष्ट्र निर्माण को निश्चित दिशा नहीं प्राप्त होती है। प्राचीन काल से ही विचारधाराओं ने राष्ट्र निर्माण की संकल्पना को उर्वर जमीन प्रदान की है। राष्ट्र निर्माण में विचारधाराओं की उपयोगिता स्वयं सिद्ध है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) का जन्म और अनौपचारिक विकास, बीसवीं शताब्दी के भारतीय इतिहास में एक अनोखी घटना है।

न केवल भारत के अंदर बल्कि विदेशों में भी संघ का प्रभावक्षेत्र दूर–दूर तक फैल रहा है। संघ से प्रेरित संस्थान और आंदोलन आज सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, श्रम, विकासात्मक, राजनीतिक और राष्ट्रीयता के अन्य क्षेत्रों में एक मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं ।

संघ ने जिन आंदोलनों की शुरुआत की वे अपने स्वरूप में समाज–सुधारवादी और धर्मनिरपेक्षतावादी हैं । इसमें आम लोगों के साथ–साथ विभिन्न क्षेत्रों के अभिजात्य वर्ग की भी व्यापक स्तर पर सहभागिता है। यह स्पष्ट रूप से समझने की जरूरत है कि संघ केवल दूसरे सामाजिक या राजनीतिक विचारों के लिए प्रतिक्रिया नहीं है।

यह वास्तविक राष्ट्रवाद और इस देश की सदियों पुरानी परंपरा में निहित विचारों और कार्यों के एक कोष का प्रतिनिधित्व करता है।

संघ के समकालीन किसी भी आंदोलन या संगठन ने इतनी बड़ी संख्या में अनुयायियों को आकर्षित नहीं किया है। संघ से जुड़े लाखों लोगों ने सामाजिक कार्य को अपने जीवन का मिशन बना लिया है, जिनके चरित्र और अखंडता पर आलोचकों द्वारा भी संदेह नहीं किया जाता है।

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिए एक आंदोलन के रूप में लोगों द्वारा पूरी तरह से पोषित की गयी , संघ जैसी समानांतर संस्था देश या कहीं और नहीं है क्योंकि संघ का विकास देश की राष्ट्रीय पहचान को स्थापित करने के लिए एक आंदोलन के रूप में हुआ। यह बात तब और भी महत्वपूर्ण हो जाती है , जब हम यह याद करते हैं कि संघ का जन्म लंबे समय तक विदेशी शासकों द्वारा मानसिक, सांस्कृतिक और आर्थिक हमले के पश्चात हुआ।

इस प्रकार से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के विचार की कल्पना ऐसे समय में की गई थी जब आत्म–विस्मृति ने समाज को पछाड़ दिया था।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के उद्देश्य को स्पष्ट रूप से समझने के लिए डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार के चिंतन को समझना जरूरी है । डॉ हेडगेवार ने भारत के इतिहास को वर्तमान एवं भविष्य से जोड़कर भारतीय राष्ट्रीयता के मूल प्रश्न पर गहन विचार किया।

राष्ट्रीय जीवन में व्याप्त मूल्य रहित व्यवहार, पद एवं प्रतिष्ठा के लिए राष्ट्रीय हितों का बलिदान एवं व्यक्ति, संप्रदाय , धर्म एवं राजनीतिक दलों के सामने राष्ट्र को गौण समझने की प्रवृत्ति को वह भारतीय जीवन की ऐसी बुराई मानते थे जिससे राष्ट्र की अधोगति होती है। भाषणों, अपीलों अथवा अपेक्षाओं से राष्ट्र सफल नहीं हो सकता।

इसके लिए निरंतर राष्ट्रीयता, देशभक्ति, सामूहिकता, सामाजिक संवेदनशीलता एवं एकता के भाव का संचार होना जरूरी है। व्यक्ति, राष्ट्र का पहला घटक होता है। जब तक उसके हृदय में राष्ट्रप्रेम की पवित्र भावना नहीं पनपेगी तब तक विशुद्ध राष्ट्रीयता की कल्पना नहीं की जा सकती है।

व्यक्ति में परिष्कार से ही राष्ट्र का परिष्कार होगा। यदि भारतीय समाज की तत्कालीन स्थिति का विश्लेषण किया जाए तो चिंतक और सिद्धांतकार थे , चिंतन व सिद्धांत था , इतिहास एवं परंपराएं थी , भविष्य की कल्पनाएं थी।

परंतु इन सबको एक सूत्र में पिरोकर एक स्वर प्रदान करने वाला संगठन नहीं था। डॉक्टर हेडगेवार ने राष्ट्रीय जीवन की इसी कमी को पहचान कर उसे पूरा करने का जो व्रत लिया था , राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना उसी का परिणाम थी। इस प्रकार से संघ का मिशन हमारी सहस्राब्दी पुरानी विरासत के साथ तालमेल बिठाता है।

शासकों के लिए हमारी संस्कृति को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय जीवन को फिर से तैयार करना तर्कसंगत होगा । इस तरह के माहौल के बीच, संघ सभी नागरिकों में और जीवन की सभी गतिविधियों में देशभक्ति की भावना की प्रधानता के अनुसार अद्वितीय है।

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एक राष्ट्रीय चरित्र को बढ़ावा देने, मातृभूमि के प्रति समर्पण, अनुशासन, संयम, साहस और वीरता की मांग करता है। इन महान आवेगों को बनाने और उनका पोषण करना देश के सामने सबसे चुनौतीपूर्ण काम है। स्वामी विवेकानंद ने इसे ही मानव–निर्माण कहा है। इस ऐतिहासिक मिशन को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पोषित करता रहा है।

भारतीय राष्ट्र की अन्य राष्ट्रों से भिन्नता भी इसी रूप में है कि यह किसी सभ्यता अथवा सांस्कृतिक चेतना का हिस्सा ना होकर अपनी सभ्यता और संस्कृति से एकात्म रूप से जुड़ा हुआ है। भारतीय सभ्यता एवं भारतीय राष्ट्र एक दूसरे पर अवलंबित हैं।

अतः इस राष्ट्र पर चोट सभ्यता पर प्रहार है एवं इस सभ्यता पर प्रश्न खड़ा करने का अर्थ भारत की राष्ट्रीयता के अस्तित्व पर प्रश्न खड़ा करना है।

संघ से जुड़े सभी चिंतकों ने हिंदू सभ्यता, हिंदू संस्कृति एवं हिंदू राष्ट्र को संकीर्ण, धार्मिक, सांप्रदायिक, जातीय ,भाषाई अथवा क्षेत्रीय धारणाओं से ऊपर उठकर देखा है। स्वतंत्रता की भावना को बनाए रखना और राष्ट्र की सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत करने के लिए एक साथ प्रयास करना शुरू से ही संघ के चरित्र की जुड़वां विशेषताओं को चिह्नित करता है और आज तक इसका मुख्य हिस्सा बना हुआ है।

हर गुजरते दिन ने इस बुनियादी दर्शन की वैधता की पुष्टि की है। इसके संस्थापक और समर्थक भारतीय समाज के अस्तित्व और स्वास्थ्य के लिए सदैव सक्रिय रहे हैं और समग्र राष्ट्र के बारे में सोचते हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अकेला ऐसा संगठन है जो देश के निकाय तथा राजनीति में सभी गलत प्रवृत्तियों के खिलाफ लगातार आवाज उठा रहा है।

स्वामी विवेकानंद से लेकर लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी से लेकर दीन दयाल उपाध्याय तक के राष्ट्रीय पुनर्जागरण की सभी जन–आकृतियों ने इस तथ्य पर बहुत जोर दिया था कि समाज को ऐसी मानसिक गुलामी से मुक्त करना उतना ही आवश्यक था जितना साम्राज्यवादी शासकों को बाहर निकालना। समान रूप से, यह इतिहास का एक तथ्य है कि राष्ट्रीय चेतना केवल एक विचार या अवधारणा नहीं रहनी चाहिए, बल्कि जीवन की हर एक गतिविधि में परिलक्षित होनी चाहिए।

मातृभूमि के प्रति समर्पण, सभी नागरिकों में भ्रातृत्व की भावना, एक सामान्य संस्कृति और साझा इतिहास और विरासत की गहन जागरूकता सबसे ज्यादा जरूरी है।

यह ऐसी भावनाएँ हैं, जिन्हें प्रत्येक नागरिक में सिंचित करना पड़ता है। जाहिर है, यह कार्य राजनीतिक संस्थानों की क्षमताओं से परे है।

यह मूल रूप से एक सामाजिक कार्य है। और इस सर्व–महत्वपूर्ण कार्य की पूर्ति के लिए विकसित तंत्र राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ है। संघ के लिए पास न केवल राष्ट्र की आवश्यकता का अनुमान लगाने की दूरदर्शिता है बल्कि उस अवधारणा को मूर्त रूप देने के लिए संगठन का कौशल भी है ।

समकालीन विश्व संक्रमण के दौर से गुजर रहा है। एक तरफ प्राकृतिक संकट हैं तो दूसरी ओर मानवजनित समस्याएं। विमर्श के इस दौर में सबसे प्रासंगिक प्रश्न है कि राष्ट्र निर्माण कैसे किया जाए और किस विचारधारा को आधार बनाया जाए? यह संगोष्ठी इसी दिशा में एक प्रयास है। संगोष्ठियों ने मानव जीवन के फलक को विस्तारित करने में हमेशा रचनात्मक योगदान दिया है।

छात्रों, शिक्षकों और प्रबुद्धवर्ग द्वारा प्रेरित यह संगोष्ठी द पीपल, बाय द पीपल, फॉर द पीपल उद्देश्य के साथ लोकतंत्र में चर्चा की भावना का प्रतीक है।

इस संगोष्ठी में भारतीय राष्ट्र के पुनर्निर्माण के विचार को केंद्र में लाने की योजना है।

महत्वपूर्ण विचारों को केवल मेट्रो शहरों में बाधित न करके विस्तारित करने का प्रयास है। छात्रों को इस संगोष्ठी से जो अभियक्ति मिलेगी, वह उन्हें भविष्य के निर्माण और सशक्त राष्ट्र में प्रबुद्ध व्यक्ति के रूप में स्थापित करेगी। यह संगोष्ठी निश्चित रूप से एक ऐसा मंच होगा जिससे राष्ट्र निर्माण के आवश्यक तत्वों को उदघाटित किया जाएगा।

धन्यवाद। जयहिन्द।